

बरसात में पशुपालन: समस्या भी, समाधान भी

डॉ. महेन्द्र सिंह मील एवं डॉ. श्रुति गर्ग

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर

बरसात का मौसम जहां खेतों के लिए जीवनदायिनी वर्षा लाता है, वहीं पशुपालकों के लिए यह कई प्रकार की चुनौतियाँ भी लेकर आता है। गीली मिट्टी, कीचड़, नमी, परजीवी संक्रमण, चारा सड़न और बीमारियों की अधिकता इस मौसम की आम समस्याएं हैं। ऐसे में यदि सतर्कता और उचित प्रबंधन न किया जाए, तो पशुओं के स्वास्थ्य, उत्पादन और प्रजनन पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए हमें वर्षा ऋतु में पशुपालन की प्रमुख समस्याएं हैं और उनसे निपटने के व्यावहारिक समाधान पर ध्यान देना चाहिए।

1. समस्या: पशु बीमारियों का बढ़ता खतरा

बरसात के मौसम में वातावरण में आर्द्रता और गंदगी बढ़ जाती है, जिससे बैक्टीरिया, वायरस और परजीवी रोगों का प्रकोप अधिक होता है। खुरपका-मुँहपका (थडक), गलघोंटू, निमोनिया, त्वचा रोग, लंगड़ापन, और आंतों के कीड़े इस मौसम में आम हो जाते हैं।

समाधान:

- सभी पशुओं का समय पर टीकाकरण सुनिश्चित करें।
- कीट-नाशक दवाओं से पशुओं को परजीवियों से बचाएँ।
- पशुशाला को सूखा, साफ और हवादार रखें।
- बीमार पशु को तुरंत अलग करें और पशु चिकित्सक से परामर्श लें।

2. समस्या: चारे की सड़न और पोषण की कमी

बरसात में हरे चारे की भरमार तो होती है, लेकिन नमी के कारण उसका भंडारण कठिन हो जाता है। सूखा चारा या भूसा गीला हो जाता है जिससे वह सड़ने लगता है और पशुओं के लिए हानिकारक हो जाता है।

समाधान:

- साइलेज और हेस बनाएँ, ताकि बरसात में भी पोषक चारा मिल सके।

- चारा स्टोर करने से पहले उसे धूप में सुखाएं और सूखे, ऊँचे स्थान पर रखें।
- गीला या सड़ा हुआ चारा कभी न खिलाएं, इससे अम्लपित्त और जठर रोग हो सकते हैं।
- पशु आहार में खनिज मिश्रण और विटामिन्स मिलाकर पोषण की पूर्ति करें।

3. समस्या: शेड और रहने की जगह की समस्याएं

बरसात के समय पशुशालाओं में पानी भरना, फिसलन और कीचड़ की समस्या आम होती है। इससे पशु असहज हो जाते हैं और चौटिल होने की संभावना बढ़ जाती है।

समाधान:

- पशुशाला की छत को टपकने से रोकें, और नालियों को साफ रखें ताकि जलभराव न हो।
- फर्श पर बालू या चूना छिड़कें, जिससे कीचड़ और बदबू से राहत मिले।
- शेड को थोड़ा ऊँचा और ढलान युक्त बनाएं जिससे पानी आसानी से बाहर निकले।
- पशुओं को सूखी, साफ जगह पर बाँधें और दिन में कम से कम एक बार धूप में चराने ले जाएं।

4. समस्या: प्रजनन संबंधी चुनौतियाँ

बरसात के समय तापमान में उतार-चढ़ाव और आर्द्रता के कारण पशुओं का प्रजनन व्यवहार प्रभावित होता है। गर्भाधान में कमी, गर्भपात, और नवजात बछड़ों की मृत्यु की आशंका बढ़ जाती है।

समाधान:

- गर्भवती पशुओं की विशेष देखभाल करें, उन्हें संतुलित आहार और सूखी जगह दें।
- प्रसव से पहले और बाद में साफ-सफाई और एन्टीसेप्टिक उपाय अपनाएं।
- बछड़ों को जन्म के तुरंत बाद कोलोस्ट्रम (पहला दूध) अवश्य पिलाएं।
- नवजातों को सूखे, गर्म और हवादार स्थान में रखें।

5. समस्या: दूध उत्पादन में गिरावट

नमी, संक्रमण और चारे की कमी से पशुओं की भूख कम हो जाती है, जिससे दूध उत्पादन में गिरावट आ जाती है। इसके साथ ही दूध की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है।

समाधान:

- पशुओं को रोजाना ताजा, पोषक आहार दें।
- दूध देने वाले पशुओं के लिए ऊर्जा और प्रोटीन युक्त आहार (जैसे दाना मिश्रण, तेल बीज खली) दें।
- खुले में चराई संभव हो तो करें, जिससे पशु ताजगी अनुभव करें।
- दूध दुहते समय साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखें।

6. समस्या: परजीवी एवं मच्छर-मक्खियों का प्रकोप

नमी और गंदगी से मच्छर, मक्खी और टिक जैसे परजीवी पनपते हैं, जो पशुओं को चूसते हैं और रोग फैलाते हैं।

समाधान:

- नियमतः डिपिंग या स्प्रे करें जिससे परजीवी नष्ट हो जाएं।
- पशुशाला के आसपास की घास और गंदगी साफ करें।
- गंदे पानी के जमाव को रोकें, जिससे मच्छरों की संख्या घटे।
- नारियल तेल में नीम का तेल मिलाकर भी मच्छरों से बचाव किया जा सकता है।

बरसात का मौसम अपने साथ चुनौतियाँ लेकर आता है, लेकिन सतर्कता, वैज्ञानिक प्रबंधन और थोड़ी सी मेहनत से पशुपालक इन समस्याओं से सफलतापूर्वक निपट सकते हैं। वर्षा ऋतु में पशुओं की स्वास्थ्य सुरक्षा, आहार व्यवस्था, स्वच्छता और शेड प्रबंधन को यदि प्राथमिकता दी जाए, तो इस मौसम को भी लाभकारी बनाया जा सकता है। “समस्या में ही समाधान छिपा होता है”, इस बात को याद रखकर अगर सावधानी बरती जाए, तो बरसात में भी पशुपालन सुरक्षित और लाभकारी बना रह सकता है।